ANUBHAVS

माँ की ममता !

© Copyright 2010, Manasamarthyadata.com

– अक्षता आचरेकर

जून २००६ से पीठ का दर्द शुरु हो गया। तकरीबन तीन महीनों तक तकलीफ होती ही रही। परमपूज्य सुचितदादा के मार्गदर्शन अनुसार फिजिओथेरपी एवं कसरत कर रही थी। पर नौकरी घर से दूर होने की वजह से यात्रा की तकलीफ हो ही रही थी और उसकी वजह से दर्द ठीक भी नहीं हो रहा था। इसलिए परमपूज्य सुचितदादा की सलाह से एम.आर.आई. कराया। वही हुआ जिसका डर था। रिपोर्ट ने स्पष्ट किया कि मुझे स्लिप-डिस्क की तकलीफ है। रीढ की चौथी और पांचवी हड्डी में अंतर निर्माण हो गया था। हड्डियों के डॉक्टर श्री वाच्छा ने शस्त्रक्रिया कराने की सलाह दी, पर मेरे मनने कहा कि जब तक दादा नहीं कहते मैं ऑपरेशन नहीं कराऊंगी। धीरे-धीरे यह पीठदर्द की तकलीफ पैरों तक पहुंच गई। तब दादा ने ऑपरेशन कराने के लिए कहा। डॉ. जयेश शाह के अस्पताल में ऑपरेशन कराने की बात तय हुई। अस्पताल भरती होने के लिए घर से निकलते समय मैंने और मेरे पति ने चिदानंदा उपासना की। रात को नींद अच्छी लगी। सुबह को ऑपरेशन थिएटर में जाते समय जरा भी डर नहीं लगा। मुझे बेहोशी का इंजेक्शन लगाया और मुझे पता ही नहीं चला कि मैं कब बेहोश हो गई। जब होश आया तो मन में 'जय जय अनिरुद्ध हरि' का जाप (बापूजी की कृपा से ही) चल रहा था। मैंने डॉ. शहा से पूछा, ''क्या ऑपरेशन हो गया? डॉ. वाच्छा कहां हैं? मुझे उन्हें धन्यवाद कहना है।'' पर वे तो तब तक चले गए थे। मैने उस दिन डॉ. वाच्छा को ऑपरेशन के बाद देखा भी नहीं और उनसे मुलाकात भी नहीं हुई । मेरा विश्वास है कि मुझे बापू, दादा नेही ऑपरेशन करके ठीक किया। मुझे जब वॉर्ड में लाया गया तब मुझे थोडासा खुमार था। पर होश में आते ही मुझे परमपूज्य बापूजी का 'अनिरुद्ध कवच' एवं 'दत्तमाला मंत्र' सुनाई दिए। मानो बापूजीने मेरी सुरक्षा के लिए यह कवच भेजा हो और उसी की वजह से मुझे ऑपेरशन का कोई दर्द नहीं हो रहा था। मेरी सहेली, रश्मीवीरा मंत्री जब मुझे अस्पताल में देखने आई तब मैं खुशी से उसे कह रही थी, ''मेरे बापूजी मेरे साथ हैं। I am absolutely O.K.''

जब मैं अस्पताल में थी तब कई परिचित (बापूभक्त) मुझसे मिलने आते थे। मेरे परिवार वालोंसे भी अधिक प्रेम से मेरा हालचाल पूछते थे। मानो प.पू. बापूजी मुझे मन:सामर्थ्य ही भेज रहे थे । सद्गुरु बापूजी द्वारा भेजे हुए इस आधार की वजह से मुझे यह महसूस ही नहीं हो रहा था कि मैं अस्पताल में हूं।

इस दौरान नंदाई की चिदानंदा उपासना करने की इच्छा अपनेआप निर्माण हो रही थी। इसलिए अस्पताल में मेरा समय जरा भी नष्ट नहीं हुआ। एक रात को नंदाई ने मेरे सपने में आकर मेरा बहुत लाड-प्यार किया। दूसरे दिन जागी तो बहुत ही प्रसन्नता महसूस हो रही थी। इसी दौर में, तय की हुई रामनाम बहियों की संख्या भी बापूजी ने मुझसे पूरी कराई। आज मैं बलविद्या के वर्ग में जाने की तैयारी कर रही हूं जो कि अहिल्यासंघ के प्रशिक्षण का एक हिस्सा है। मुझे इतने बडे ऑपरेशन से हौले से बाहर निकालकर पुन: पहले की भान्ति हृष्टपुष्ट बनानेवाले मेरे बापूजी, नंदाई, दाऊं के चरणों में यही प्रार्थना करती हूं कि,

'जागो तुझिये पायी इमान । इतुकेंचि दान देई मज ।।'

(श्रीसाईसच्चरित अ. ३६, ओ. १४२)

(तेरे चरणों में मेरा ईमान बना रहे, यही दान दो मुझे।)

ANUBHAVS

© Copyright 2010, Manasamarthyadata.com

manasamarthyadata.com